2 सौहार्दं प्रकृतेः शोभा

पाठपरिचयः

- आजकल हम यत्र-तत्र सर्वत्र देखते हैं कि समाज में प्रायः सभी स्वयं को श्रेष्ठ समझते हुए परस्पर एक-दूसरे का तिरस्कार कर रहे हैं।
- सामान्यतः पारस्परिक व्यवहार में दूसरों के कल्याण के विषय में तो सोच ही नहीं रह गई। सभी स्वार्थ-साधना में ही लगे हुए हैं और जीवन का उद्देश्य ऐसे लोगों के लिए यही बन गया है कि-

  ''नीचैरनीचैरतिनीचनीचैः सर्वैः उपायैः फलमेव साध्यम्''
- अतः समाज में मेल-जोल बढ़ाने की दृष्टि से इस पाठ में पशु-पक्षियों के माध्यम से समाज में स्वयं को दूसरों से श्रेष्ठ दिखाने के प्रयास को दिखाते हुए प्रकृति माता के माध्यम से अन्त में यह दिखाने का प्रयास किया गया है कि सभी का यथासमय अपना-अपना महत्त्व है तथा सभी एक-दूसरे पर आश्रित हैं।
- अतः हमें परस्पर विवाद करते हुए नहीं अपितु मिल-जुलकर रहना चाहिए तभी हमारा कल्याण संभव है।

शब्दार्थाः (Word-meanings Sanskrit to Hindi)

विश्राम्यते–आराम करता है। **धुनोति**–पकड़कर घुमा देता है। **प्रहर्तुम्**–मारने के लिए। **वृक्षम् आरूढः**–पेड़ पर चढ़ गया। **आकृष्य**–खींचकर। **तुदन्ति**–तंग करते हैं। **निद्राभङ्गदुःखेन**–नींद के भंग होने के दुःख से। **सन्नपि**–होता हुआ। **सर्वजन्तून्**–सब जीवों से। **पृच्छति**–पूछता है। **गर्जन्**–गरजते हुए। **वित्रस्तान्**–विशेष रूप से डरे हुओं को। **पीड्यमानान्**–पीड़ित होते हुओं को। **परैः**–दूसरों के द्वारा। **पार्थिवरूपेण**–राजा के रूप में। **कृतान्तः**–यमराज है। **उपहसन्** – मज़ाक करती हुई। **कर्कशध्वनिना**–कठोर आवाज़ से। **आकुलीकरोषि** – व्याकुल करते हो। **मन्यामहे** – मानें। **जल्पसि** – बड़बड़ाती हो। **गौराङ्गः**–गोरे रंग की (के)। **विस्मर्यते**–भूल जाती हो। **सत्यप्रियता**–सच से प्रेम। **दशेत्**– दस ले। **विश्वप्रथितम्** – संसार में फैली है। **अतिविकत्थनेन** – अधिक आत्मा प्रशंसा करते/डींगें मारने से। **काकः**–कौआ। **कृष्णः**–काला। **पिकः**–कोयल। **भेदः**–अन्तर। **पिककाकयोः**–कोयल और कौए में। **परभृत्!**–दूसरों पर पलने वाली। **शृण्वन्नेव**–सुनते हुए ही। **तुदन्तम्**–तंग करते हुए को। **पोथयित्वा**–लपेटकर। **पक्षिसम्राट्**–पक्षियों का राजा। **विधूय**–मरोड़कर। **आरोहति**–चढ़ जाता है। **स्वशुण्डेन**–अपनी सूँड़ से। **आलोडयितुम्**–हिलाने में/हिलाया। **धावन्तम्**–दौड़ते हुए को। **स्थितप्रज्ञः**–योगी। **नीर्मीय**–निर्माण करके। **अलंकुर्वाणैः**–सुशोभित करने वालों से। **क्रियान्वितान्**–क्रियान्वित। **कारयिष्यामि**–कराऊँगा। **आत्मश्लाघायाः**–अपनी प्रशंसा से। **सम्यङ्नेता**– अच्छा नेता। **अकर्णधारा**– कान तक के जल वाले। **जलधौ**– सागर में। **विप्लेवेत्**– डूब जाए। **व्याजेन**–बहाने से। **वराकान्**–बेचारी। **अधिगृह्य**–पकड़कर। **सगर्वम्**–अभिमान के साथ। **विधातुः**–परमात्मा के। **क्षमः**–समर्थ है। **अहिभुक्**–साँप खाने वाले। **पिच्छानाम्**–पंखों की। **अपूर्वम्**–अनोखी। **उद्घाट्य**–फैलाकर। **कर्तारम्**–करने वाले को। **स्वसौन्दर्येण**–अपनी सुन्दरता से। **बहिष्करिष्यामि**– बाहर कर दूँगा। **मत्सदृशः**–मेरे जैसा। **अन्यथाकर्तुम्**–मिटाने में। **पातुम्**–पीने के लिए। **सुपात्रम्**–योग्य पात्र। **चीयते**–चुना जा रहा है। **सर्वसम्मया**–सबकी सम्मति से। **तूष्णीम् भव**–चुप हो जाओ। **निश्चेतव्यम्**–निश्चित करना चाहिए। **गहननिद्रायाम्**–गहरी नींद में। **स्वपन्तम्**–सोते हुए को। **वीक्ष्य**–देखकर। **आत्मश्लाघाहीनः**–आत्मप्रशंसा से रहित। **पदनिर्लिप्तः**–पद की लालच से रहित। **आदिशन्ति**–आदेश देते हैं। **आनीयन्ताम्**–ले आओ (लाए जाएँ)। **सज्जायै**–तैयारी के लिए। **अनायासः**–अचानक। **विद्यमानेषु**–विद्यमान रहने पर। **दिवान्धस्य**–दिन के अंधे के। **निद्रायमाणः**–सोते हुए। **स्वभावरौद्रम्** – भयंकर स्वभाव वाले को। **क्रूरम्** – निर्दयी को। **अप्रियवादिनम्** – अप्रिय बोलने वाले को। **मिथः**–आपस में। **अन्योन्याश्रिताः**– एक-दूसरे पर आश्रित। **प्रतिगृह्णाति**– लेता है। **गुह्यम्**– गुप्त बातें। **आख्याति**– बताता है। **भुङ्क्ते**– खाता। **योजयते**– जोड़ता है। **प्रतिलक्षणम्** – प्रेम (मित्र) के लक्षण। **प्राणिनः**–सारे जीव-जन्तु। **समवेतस्वरेण**– एक स्वर से। **सम्यक्**–ठीक तरह से। **मत्कृते**–मेरे लिए। **यापयन्तु**–बिताएँ। **मोदध्वम्**–प्रसन्न होवें (प्रसन्न होना चाहिए)। **कुरुध्वम्**–करना चाहिए। **अङ्गुष्ठोदकमात्रेण** – अँगूठे भर/थोड़े से जल की मात्रा से।

क्रमानुसारं पाठानुवादः (Chapter translation in sequence)

1. **वनस्य दृश्यम् समीपे एवैका नदी वहति। एकः सिंहः सुखेन विश्राम्यते तदैव एकः वानरः आगत्य तस्य पुच्छं धुनोति। क्रुद्धः सिंहः तं प्रहर्तुमिच्छति परं वानरस्तु कूर्दित्वा वृक्षमारूढः। तदैव अन्यस्मात् वृक्षात् अपरः वानरः सिंहस्य कर्णमाकृष्य पुनः वृक्षोपरि आरोहति। एवमेव वानराः वारं वारं सिंहं तुदन्ति। क्रुद्धः सिंहः इतस्ततः धावति, गर्जति परं किमपि कर्तुमसमर्थः एव तिष्ठति। वानराः हसन्ति वृक्षोपरि च विविधाः पक्षिणः अपि सिंहस्य एतादृशीं दशां दृष्ट्वा हर्षमिश्रितं कलरवं कुर्वन्ति। निद्राभङ्गदुःखेन वनराजः सन्नपि तुच्छजीवैः आत्मनः एतादृश्या दुरवस्थया श्रान्तः सर्वजन्तून् दृष्ट्वा पृच्छति-**

हिंदी अनुवाद : वन का दृश्य। पास में ही एक नदी बह रही है। एक शेर सुख से विश्राम कर रहा है तभी एक बन्दर आकर उसकी पूँछ को पकड़कर घुमा देता है। क्रोधित शेर उस पर प्रहार करना चाहता है, परन्तु बन्दर कूदकर पेड़ पर चढ़ जाता है। तभी दूसरे पेड़ पर से दूसरा बन्दर शेर के कान को खींचकर फिर पेड़ पर चढ़ जाता है; ऐसे बन्दर बार-बार शेर को तंग करते हैं। क्रोधित सिंह इधर-उधर दौड़ता है, गरजता है, परन्तु कुछ भी करने में असमर्थ (लाचार) ही रहता है। बन्दर हँसते हैं और वृक्ष के ऊपर अनेक प्रकार के पक्षी भी शेर की ऐसी दशा देखकर खुशी से मिलीजुली चहचहाहट करते हैं।

नींद के टूट जाने के दुःख से जंगल का राजा होते हुए भी छोटे जीवों से अपनी ऐसी दशा से थका (शेर) सब जीवों को देखकर पूछता है–

2. **सिंहः – (क्रोधेन गर्जन्) भोः! अहं वनराजः किं भयं न जायते? किमर्थं मामेवं तुदन्ति सर्वे मिलित्वा?**

एकः वानरः – यतः त्वं वनराजः भवितुं तु सर्वथाऽयोग्यः। राजा तु रक्षकः भवति परं भवान् तु भक्षकः। अपि च स्वरक्षायामपि समर्थः नासि तर्हि कथमस्मान् रक्षिष्यसि?

अन्यः वानरः – किं न श्रुता त्वया पञ्चतन्त्रोक्तिः–

यो न रक्षति वित्रस्तान् पीड्यमानान्परैः सदा।
जन्तून् पार्थिवरूपेण स कृतान्तो न संशयः॥

हिंदी अनुवाद :

सिंह – (क्रोध से गरजता हुआ) अरे! मैं जंगल का राजा किसी से डरता नहीं। क्यों सभी मिलकर मुझे तंग करते हैं?

एक बन्दर – क्योंकि तुम जंगल के राजा होने के लिए पूरी तरह से अयोग्य हो। राजा तो रक्षक होता है, परन्तु आप तो भक्षक हैं और आप अपनी भी रक्षा करने में भी समर्थ नहीं हैं तो कैसे हमारी रक्षा करोगे?

अन्य (दूसरा) बन्दर – क्या तुमने पञ्चतन्त्र की यह उक्ति (कथन) नहीं सुनी?

जो राजा के रूप में (राजा होते हुए) विशेष रूप से डरे हुओं को तथा दूसरों के द्वारा पीड़ित जन्तुओं की रक्षा नहीं करता है। वह साक्षात् यमराज होता है यहाँ कोई सन्देह नहीं।

3. **काकः– आम् सत्यं कथितं त्वया–वस्तुतः वनराजः भवितुं तु अहमेव योग्यः।**

पिकः– (उपहसन्) कथं त्वं योग्यः वनराजः भवितुं, यत्र तत्र का-का इति कर्कशध्वनिना वातावरणमाकुलीकरोषि। न रूपं न ध्वनिरस्ति। कृष्णवर्णं, मेध्यामेध्यभक्षकं त्वां कथं वनराजं मन्यामहे वयम्?

काकः– अरे! अरे! किं जल्पसि? यदि अहं कृष्णवर्णः तर्हि त्वं किं गौराङ्गः? अपि च विस्मर्यते किं यत् मम सत्यप्रियता तु जनानां कृते उदाहरणस्वरूपा–'अनृतं वदसि चेत् काकः दशेत्'-इति प्रकारेण। अस्माकं परिश्रमः ऐक्यं च विश्वप्रथितम्। अपि च काकचेष्टः विद्यार्थी एव आदर्शच्छात्रः मन्यते।

पिकः –अलम् अलम् अतिविकत्थनेन, किं विस्मर्यते यत्–

काकः कृष्णः पिकः कृष्णः कोः भेदः पिककाकयोः।
वसन्तसमये प्राप्ते काकः काकः पिकः पिकः॥

हिंदी अनुवाद :

कौआ – हाँ, तुमने सच कहा–वास्तव में वनराज (जंगल का राजा) होने के लिए तो मैं ही योग्य हूँ।

कोयल – (उपहास/मज़ाक करती हुई) कैसे तुम जंगल के राजा (वनराज) हो सकने के योग्य हो, जहाँ-तहाँ काँव-काँव की कठोर आवाज़ से वातावरण को व्याकुल करते हो। (तुम्हारे पास) न सुन्दरता है और ना ही सुन्दर आवाज़ है। काले रंग वाले, खाने योग्य और न खाने योग्य वस्तुओं को खाने वाले तुमको हम कैसे वनराज मानें?

कौआ – अरे! अरे! क्या बड़बड़ाती हो? यदि मैं काले रंग वाला हूँ तो तुम क्या गोरे रंग की हो? और भूल भी जाती हो कि मेरी सत्यप्रियता (सत्य के प्रति प्रेम) तो लोगों के लिए उदाहरण के रूप में –'यदि झूठ बोलोगे तो कौआ काटेगा'–इस प्रकरण में है। हमारा परिश्रम और एकता तो संसार में फैली भी है और कौए की चेष्टा वाला छात्र ही आदर्श छात्र माना जाता है।

कोयल – अधिक आत्मप्रशंसा करने (डींगें मारने) से बस करो। क्या भूल जाते हो कि–
कौआ काला है, कोयल काली है। कौआ और कोयल में क्या भेद है। वसन्त समय आने पर कौआ-कौआ होता है और कोयल-कोयल होती है।

4. **काकः– रे परभृत्! अहं यदि तव संततिं न पालयामि तर्हि कुत्र स्युः पिकाः? अतः अहम् एव करुणापरः पक्षिसम्राट् काकः।**

गजः –समीपतः एवागच्छन् अरे! अरे! सर्वं सम्भाषणं शृण्वन्नेवाहम् अत्रागच्छम्। अहं विशालकायः, बलशाली, पराक्रमी च। सिंहः वा स्यात् अथवा अन्यः कोऽपि, वन्यपशून् तु तुदन्तं जन्तुमहं स्वशुण्डेन पोथयित्वा मारयिष्यामि। किमन्यः कोऽप्यस्ति एतादृशः पराक्रमी। अतः अहमेव योग्यः वनराजपदाय।

वानरः –अरे! अरे! एवं वा (शीघ्रमेव गजस्यापि पुच्छं विधूय वृक्षोपरि आरोहति।

हिंदी अनुवाद :

कौआ – अरे दूसरों पर पलने वाली! यदि मैं तेरी सन्तान को नहीं पालूँ तो कहाँ कोयल हों? इसलिए मैं ही दयालु पक्षियों का राजा कौआ हूँ।

हाथी – पास से ही आते हुए अरे! अरे! सारी बात को सुनता हुआ ही मैं यहाँ आया हूँ। मैं बहुत बड़े शरीर वाला, बलवान और वीर हूँ। शेर हो अथवा दूसरा कोई भी। वन के पशुओं को तंग (परेशान) करते हुए जीव को मैं अपनी सूँड़ से पटक-पटककर मार डालूँगा। क्या कोई दूसरा ऐसा वीर है। इसलिए मैं ही वनराज (जंगल के राजा) के पद के लिए योग्य हूँ।

बन्दर – अरे! अरे! अथवा ऐसे (जल्दी से ही हाथी के भी पूँछ को मरोड़कर पेड़ के ऊपर चढ़ जाता है।)

5. **(गजः तं वृक्षमेव स्वशुण्डेन आलोडयितुमिच्छति परं वानरस्तु कूर्दित्वा अन्यं वृक्षमारोहति। एवं गजं वृक्षात् वृक्षं प्रति धावन्तं दृष्ट्वा सिंहः अपि हसति वदति च।)**

सिंहः – भोः गज! मामप्येवमेवातुदन् एते वानराः।

वानरः – एतस्मादेव तु कथयामि यदहमेव योग्यः वनराजपदाय येन विशालकायं पराक्रमिणं, भयंकरं चापि सिंह गजं वा पराजेतुं समर्था अस्माकं जातिः। अतः वन्यजन्तूनां रक्षायै वयमेव क्षमाः।

(एतत्सर्वं श्रुत्वा नदीमध्यस्थितः एकः बकः)

बकः – अरे! अरे! मां विहाय कथमन्यः कोऽपि राजा भवितुमर्हति अहं तु शीतले जले बहुकालपर्यन्तम् अविचलः ध्यानमग्नः स्थितप्रज्ञ इव स्थित्वा सर्वेषां रक्षायाः उपायान् चिन्तयिष्यामि, योजनां निर्मीय च स्वसभायां विविधपदमलंकुर्वाणैः जन्तुभिश्च मिलित्वा रक्षोपायान् क्रियान्वितान् कारयिष्यामि, अतः अहमेव वनराजपदप्राप्तये योग्यः।

मयूरः – (वृक्षोपरितः-साट्टहासपूर्वकम्) विरम विरम आत्मश्लाघायाः किं न जानासि यत्–

यदि न स्यान्नरपतिः सम्यङ्नेता ततः प्रजा।
अकर्णधारा जलधौ विप्लवेतेह नौरिव॥

हिंदी अनुवाद : (हाथी उस पेड़ को ही अपनी सूँड़ से हिलाना चाहता है परन्तु बन्दर कूदकर दूसरे वृक्ष पर चढ़ जाता है। इस प्रकार हाथी को एक वृक्ष से दूसरे वृक्ष की ओर दौड़ते हुए देखकर शेर भी हँसता है और कहता है।)

सिंह – हे हाथी! मुझको भी इन बन्दरों ने ऐसे ही तंग किया था।

बन्दर – इसीलिए तो कहता हूँ कि मैं ही वनराज (जंगल के राजा) के पद हेतु योग्य हूँ, जिससे हमारी जाति बड़े शरीर वाले, वीर और भयानक शेर अथवा हाथी को भी पराजित (हराने) करने में समर्थ है। अतः जंगल के जीवों की रक्षा के लिए हम ही योग्य (समर्थ) हैं।

(यह सब सुनकर नदी के बीच से बगुला)

बगुला – अरे! अरे! मुझको छोड़कर कैसे दूसरा कोई भी राजा हो सकता है। मैं तो ठंडे जल में बहुत समय तक स्थिर, ध्यान में मग्न योगी की तरह ठहरकर (स्थिति होकर) सबकी रक्षा के उपायों को सोचूँगा और योजना बनाकर अपनी सभा में अनेक पदों को सुशोभित करने वाले जीवों से मिलकर रक्षा के उपायों को कार्यान्वित (साकार रूप में) कराऊँगा। इसलिए मैं ही जंगल के राजा के पद की प्राप्ति के लिए योग्य हूँ।

मोर – (वृक्ष के ऊपर से–अट्टहासपूर्वक) अपनी प्रशंसा करने से रुको रुको; नहीं जानते हो कि–
जो नेता अच्छा राजा नहीं होवे तो उससे (उसकी) प्रजा कान तक के जल वाले समुद्र में डूबने वाली नौका की तरह इस संसार में डूब जाती है।

6. **को न जानाति तव ध्यानावस्थाम्। 'स्थितप्रज्ञ' इति व्याजेन वराकान् मीनान् छलेन अधिगृह्य क्रूरतया भक्षयसि। धिक् त्वाम्। तव कारणात् तु सर्वं पक्षिकुलमेवावमानितं जातम्।**

वानरः – (सगर्वम्) अतएव कथयामि यत् अहमेव योग्यः वनराजपदाय। शीघ्रमेव मम राज्याभिषेकाय तत्पराः भवन्तु सर्वे वन्यजीवाः।

मयूरः – अरे वानर! तूष्णीं भव। कथं त्वं योग्यः वनराजपदाय? पश्यतु पश्यतु मम शिरसि राजमुकुटमिव शिखां स्थापयता विधात्रा एवाहं पक्षिराजः कृतः अतः वने निवसन्तं माम् वनराजरूपेणापि द्रष्टुं सज्जाः भवन्तु अधुना यतः कथं कोऽप्यन्यः विधातुः निर्णयम् अन्यथाकर्तुं क्षमः।

काकः – (सव्यङ्ग्यम्) अरे अहिभुक्। नृत्यातिरिक्तं का तव विशेषता यत् त्वां वनराजपदाय योग्यं मन्यामहे वयम्।

मयूरः – यतः मम नृत्यं तु प्रकृतेः आराधना। पश्य! पश्य! मम पिच्छानामपूर्वं सौंदर्यम् (पिच्छानुद्घाट्य नृत्यमुद्रायां स्थितः सन्) न कोऽपि त्रैलोक्ये मत्सदृशः सुन्दरः। वन्यजन्तूनामुपरि आक्रमणं कर्तारं तु अहं स्वसौन्दर्येण नृत्येन च आकर्षितं कृत्वा वनात् बहिष्करिष्यामि। अतः अहमेव योग्यः वनराजपदाय।

हिंदी अनुवाद :

मोर – तुम्हारी ध्यान की अवस्था (स्थिति) को कौन नहीं जानता है। योगी के बहाने से बेचारी मछलियों को छलपूर्वक पकड़कर निर्दयता से खा जाते हो। तुम्हें धिक्कार है। तुम्हारे कारण से तो सारा पक्षिकुल (पक्षियों का संसार) ही अपमानित हो गया है।

बन्दर – (गर्व के साथ) इसलिए कहता हूँ कि मैं ही वनराज (वन के राजा के) पद के लिए योग्य हूँ। सभी वन के जीव शीघ्र ही मेरे राज्याभिषेक के लिए तैयार हों।

मोर – अरे बन्दर! चुप हो जा। तू जंगल के राजा के पद के लिए कैसे योग्य है? देखो-देखो मेरे सिर पर राजमुकुट की तरह चोटी को स्थापित करने वाले परमात्मा ने ही मुझे पक्षीराज बनाया है इसलिए वन में निवास करने वाले (निवास करते हुए) मुझको जंगल के राजा के रूप में भी देखने के लिए (आप सब) तैयार हों। इस समय क्योंकि कैसे कोई भी दूसरा परमात्मा की व्यवस्था (निर्णय) को व्यर्थ करने में समर्थ है।

कौआ – (व्यंग्य के साथ) अरे साँप खाने वाले! नाचने के अलावा तुम्हारी क्या विशेषता है कि तुमको वनराज के पद के लिए हम योग्य मान लें।

मोर – क्योंकि मेरा नृत्य (नाच) तो प्रकृति की पूजा है। देखो! देखो! मेरे पंखों (पूँछ) की अनोखी सुन्दरता (पंखों को खोलकर नाच/नृत्य की मुद्रा/स्थिति में खड़ा होता हुआ) कोई भी तीनों लोकों में मेरी तरह सुन्दर नहीं है। जंगल के जीवों पर आक्रमण करने वाले को मैं अपनी सुन्दरता और नृत्य से आकर्षित करके जंगल से बाहर कर दूँगा। इसलिए मैं ही वन के राजा के पद के लिए योग्य हूँ।

7. **(एतस्मिन्नेव काले व्याघ्रचित्रकौ अपि नदीजलं पातुमागतौ एतं विवादं शृणुतः वदतः च)**

व्याघ्रचित्रकौ – **अरे किं वनराजपदाय सुपात्रं चीयते?**
एतदर्थं तु आवामेव योग्यौ। यस्य कस्यापि चयनं कुर्वन्तु सर्वसम्मत्या।

सिंहः – **तूष्णीं भव भोः। युवामपि मत्सदृशौ भक्षकौ न तु रक्षकौ। एते वन्यजीवाः भक्षकं रक्षकपदयोग्यं न मन्यन्ते अतएव विचारविमर्शः प्रचलति।**

बकः – **सर्वथा सम्यगुक्तम् सिंहमहोदयेन। वस्तुतः एव सिंहेन बहुकालपर्यन्तं शासनं कृतम् परमधुना तु कोऽपि पक्षी एव राजेति निश्चेतव्यम् अत्र तु संशोतिलेशस्यापि अवकाशः एव नास्ति।**

हिंदी अनुवाद : **(इसी समय बाघ और चीता भी नदी के जल को पीने के लिए आ गए, इस विवाद को सुनते और बोलते हैं)**

बाघ और चीता – अरे क्या वन के राजा के पद के लिए अच्छे पात्र (प्रत्याशी) को चुना जा रहा है? इसके लिए तो हम दोनों ही योग्य हैं। जिस किसी का भी सबकी सहमति से कर लें।

सिंह – अरे चुप हो जाओ। तुम दोनों भी मुझ जैसे ही भक्षक हो रक्षक तो नहीं। यहाँ वन के जीव भक्षक को रक्षक के पद के योग्य नहीं मानते हैं इसलिए बात चल रही है।

बगुला – शेर महोदय ने पूरी तरह से ठीक ही कहा है। वास्तव में शेर ने ही बहुत समय तक राज्य किया है परन्तु अब तो कोई पक्षी ही राजा बने ऐसा निश्चय करना चाहिए यहाँ तो संशय (सन्देह) का थोड़ा सा भी स्थान नहीं है।

8. सर्वे पक्षिणः– **(उच्चैः) आम् आम्–कश्चित् खगः एव वनराजः भविष्यति इति।**

(परं कश्चिदपि खगः आत्मानं विना नान्यं कमपि अस्मै पदाय योग्यं चिन्तयन्ति तर्हि कथं निर्णयः भवेत् तदा तैः सर्वैः गहननिद्रायां निश्चिन्तं स्वपन्तम् उलूकं वीक्ष्य विचारितम् यदेषः आत्मश्लाघाहीनः पदनिर्लिप्तः उलूको एवास्माकं राजा भविष्यति। परस्परमादिशन्ति च तदानीयन्तां नृपाभिषेकसम्बन्धिनः सम्भाराः इति।)

सर्वे पक्षिणः सज्जायै गन्तुमिच्छन्ति तर्हि अनायास एव–

काकः–(अट्टहासपूर्णेन-स्वेरण)-सर्वथा अयुक्तमेतत् यन्मयूर-हंस-कोकिल-चक्रवाक-शुक-सारसादिषु पक्षिप्रधानेषु विद्यमानेषु दिवान्धस्यास्य करालवक्त्रस्याभिषेकार्थं सर्वे सज्जाः। पूर्णं दिनं यावत् निद्रायमाणः एषः कथमस्मान् रक्षिष्यति। वस्तुतस्तु–

स्वभावरौद्रमत्युग्रं क्रूरमप्रियवादिनम्।
उलूकं नृपतिं कृत्वा का नु सिद्धिर्भविष्यति ॥

हिंदी अनुवाद : **सभी पक्षी** –(जोर से)- हाँ हाँ–कोई पक्षी ही जंगल का राजा होगा।

(परंतु कोई भी पक्षी अपने अलावा दूसरे किसी को भी इस पद के लिए योग्य नहीं सोचता तो कैसे निर्णय हो। तब उन सभी ने गहरी नींद में निश्चिन्त सोते हुए उल्लू को देखकर सोचा कि यह आत्मप्रशंसा से रहित, पद के लालच से मुक्त उल्लू ही हमारा राजा होगा और आपस में आदेश करते हैं तो राजा के अभिषेक के लिए सामान लाए जाएँ।)

सभी पक्षी तैयारी के लिए जाना चाहते हैं तभी अचानक ही ···

कौआ – (अट्टहास से युक्त स्वर से) यह पूरी तरह से अनुचित है कि मोर-हंस-कोयल-चकवा-तोता -सारस आदि प्रमुख पक्षियों के विद्यमान होने (रहने) पर दिन के अंधे इस भयानक मुख वाले के अभिषेक (राजा बनाने) के लिए सब तैयार हैं। पूरे दिन तक (भर) सोता हुआ यह कैसे हमारी रक्षा करेगा। वास्तव में तो–

भयानक स्वाभाव वाले, बहुत क्रोधी, निर्दयी और अप्रिय बोलने वाले उल्लू को राजा बनाकर निश्चित रूप से क्या सफलता या लाभ होगा?

9. **(ततः प्रविशति प्रकृतिमाता)**

(सस्नेहम्) भोः भोः प्राणिनः। यूयम् सर्वे एव मे सन्ततिः। कथं मिथः कलहं कुर्वन्ति। वस्तुतः सर्वे वन्यजीविनः अन्योन्याश्रिताः। सदैव स्मरत–

ददाति प्रतिगृह्णाति, गुह्यमाख्याति पृच्छति।
भुङ्क्ते भोजयते चैव षड्-विधं प्रीतिलक्षणम्॥

(सर्वे प्राणिनः समवेतस्वरेण)

मातः। कथयति तु भवती सर्वथा सम्यक् परं वयं भवतीं न जानीमः। भवत्याः परिचयः कः?

प्रकृतिमाता–अहं प्रकृति युष्माकं सर्वेषां जननी? यूयं सर्वे एव मे प्रियाः। सर्वेषामेव मत्कृते महत्त्वं विद्यते यथासमयम् न तावत् कलहेन समयं वृथा यापयन्तु अपितु मिलित्वा एव मोदध्वं जीवनं च रसमयं कुरुध्वम्। तद्यथा कथितम्–

प्रजासुखे सुखं राज्ञः, प्रजानां च हिते हितम्।
नात्मप्रियं हितं राज्ञः, प्रजानां तु प्रियं हितम्॥

अपि च– अगाधजलसञ्चारी न गर्वं याति रोहितः।
अङ्गुष्ठोदकमात्रेण शफरी फुर्फुरायते॥

अतः भवन्तः सर्वेऽपि शफरीवत् एकैकस्य गुणस्य चर्चां विहाय, मिलित्वा, प्रकृतिसौन्दर्याय वनरक्षायै च प्रयतन्ताम्।

सर्वे प्रकृतिमातरं प्रणमन्ति मिलित्वा दृढसंकल्पपूर्वकं च गायन्ति–

प्राणिनां जायते हानिः परस्परविवादतः।
अन्योन्यसहयोगेन लाभस्तेषां प्रजायते॥

हिंदी अनुवाद : (उसके बाद प्रकृतिमाता प्रवेश करती है।)

(प्रेम के साथ) अरे-अरे जीवो! तुम सब ही मेरी सन्तानें हो। क्यों आपस में झगड़ते हो। वास्तव में सभी वन्यजीव (जंगली प्राणीगण) एक-दूसरे पर आश्रित हैं। सदैव याद रखो–

जो देता है, लेता है, गुप्त बातें बताता है अर्थात् सावधान करता है, पूछता है, खाता है और (खाने के लिए) जोड़ता है। यह छह प्रकार के प्रेम के लक्षण (मित्र के लक्षण) हैं।

(सभी प्राणी एक स्वर से)

हे माता! आप तो पूरी तरह से ठीक कहती हैं परन्तु हम तो आपको नहीं जानते हैं। आपका क्या परिचय है?

प्रकृतिमाता–मैं प्रकृति तुम सबकी माँ हूँ। तुम सभी मेरे प्रिय हो। सभी का ही उचित समय पर मेरे लिए महत्व है तो लड़ाई से समय को व्यर्थ न बिताओ बल्कि मिलकर ही प्रसन्न होवो और जीवन को रस से युक्त (खुशी से युक्त) करो तो जैसा कहा गया है–

राजा का प्रजा के सुख में ही सुख और प्रजा के हित में (ही) अपना हित होता है। राजा का अपना हित प्रिय नहीं होता है। प्रजाओं का हित ही तो उसे प्रिय होता है।

और भी–

अथाह (अनन्त) जल में घूमने वाली रोहू नामक मछली कभी भी अपनी कुशलता पर गर्व/घमंड नहीं करती है। परन्तु अँगूठे मात्र अर्थात् थोड़े से जल में घूमने वाली छोटी सहरी मछली अधिक फुदकती है।

अतः आप सभी छोटी सहरी मछली की तरह एक-एक गुण की चर्चा को छोड़कर प्रकृति की सुन्दरता और वन की रक्षा के लिए मिलकर प्रयत्न करो।

सभी जीव-जन्तु प्रकृति माता को प्रणाम करते हैं और मिलकर मजबूत संकल्प के साथ गाते हैं–

आपस के विवाद (लड़ाई-झगड़े) से सभी जीवों की हानि/नुकसान होती है। परन्तु एक-दूसरे (परस्पर) के सहयोग से उनका लाभ होता है।

विपर्ययपदानि (Antonyms)

पदानि	–	विपर्ययाः	पदानि	–	विपर्ययाः	पदानि	–	विपर्ययाः
वनस्य	–	नगरस्य	आत्मनः	–	परकीयः	हर्षः	–	शोकः
समीपे	–	दूरे	दुरवस्थया	–	सुवस्थया	मिश्रितम्	–	अमिश्रतम्
सुखेन	–	दुःखेन	हसन्ति	–	रुदन्ति	पृच्छति	–	उत्तरति
आगत्य	–	गत्वा	पक्षिणः	–	पशवः	समर्थः	–	असमर्थः
वारं वारम्	–	एकवारम्	एतादृशीम्	–	तादृशीम्	क्रोधेन	–	हर्षेण, प्रसन्नतया
रक्षकः	–	भक्षकः	श्रुता	–	उक्तम्, कथितम्	अहम्	–	त्वम्
माम्	–	त्वाम्	न	–	आम्	भयम्	–	अभयम्
अयोग्यः	–	योग्यः	जायते	–	अजायते	त्रस्तान्	–	अत्रस्तान्
सदा	–	कदाचित्	संशयः	–	असंशयः	रक्षति	–	भक्षति

योग्यः	–	अयोग्यः	वयम्	–	अहम्	अनृतम्	–	सत्यम्
कर्कश	–	मधुर	विद्यार्थी	–	गुरुः, अध्यापकः	परिश्रमः	–	अलसः
रूपम्	–	अरूपम्	गौराङ्गः	–	कृष्णः	ऐक्यम्	–	नैक्यम् (न ऐक्यम्)
कृष्णः	–	श्वेतः	विस्मर्यते	–	स्मर्यते	आदर्शः	–	अनादर्शः
मेध्यम्	–	अमेध्यम्	सत्य	–	असत्य	काकः	–	पिकः
भक्षकम्	–	रक्षकम्	प्रिय	–	अप्रिय	कृष्णः	–	श्वेतः
प्राप्ते	–	अप्राप्ते	भेदः	–	अभेदः	परभृत्	–	स्वभृत्
मारयिष्यामि	–	जीविष्यामि	तुदन्तम्	–	प्रसीदन्तम्	संततिं	–	असंततिं
शीघ्रम्	–	मन्दम्	आरोहति	–	अवरोहति	आगच्छन्	–	अगच्छन्
सर्वाम्	–	एकाम्	वृक्षस्योपरि	–	वृक्षस्याधः	विशालकायः	–	लघुकायः
अत्र	–	तत्र	उपरि	–	अधः	स्यात्	–	भवेत्
बलशाली	–	निर्बलः	गजः	–	गजिनी	विहाय	–	गृहीत्वा
मिलित्वा	–	कलहित्वा	हसति	–	रोदिति	राजा	–	प्रजा
कारयिष्यामि	–	अकारयिष्यामि	तुदन्	–	अतुदन्	शीतले	–	उष्णे
वयम्	–	अहम्	पराक्रमिणाम्	–	अपराक्रमिणाम्	जले	–	स्थले
आत्मश्लाघायाः	–	परश्लाघायाः	पराजेतुम्	–	अपराजेतुम्	अविचलः	–	विचलः
जानासि	–	अजानासि	क्षमाः	–	श्रापः	स्थित्वा	–	चलित्वा
सम्यक्	–	असम्यक्	राजा	–	प्रजा	अकर्णधारा	–	कर्णधारा
जलधौ	–	भूमौ	जानाति	–	न जानाति	कर्तुम्	–	अकर्तुम्
वराकान्	–	क्रूरान्	शिरसि	–	चरणौ	छलेन	–	सरलतया
पक्षिकुलम्	–	पक्षि एकम्	निर्णयम्	–	अनिर्णयम्	पातुम्	–	खादितुम्
तूष्णीम्	–	चीत्कारम्	रक्षकः	–	भक्षकः	सम्यक्	–	असम्यक्
पक्षी	–	पशु	राजा	–	प्रजा	निश्चेतव्यम्	–	अनिश्चेतव्यम्
अत्र	–	तत्र	अवकाशः	–	अनवकाशः	नास्ति	–	अस्ति
उच्चैः	–	नीचैः	आम्	–	नहि	कश्चित्	–	सर्वे
भविष्यति	–	अभवत्	पक्षिणः	–	पशवः	अस्माकम्	–	युष्माकम्
पूर्णम्	–	अर्धम्	राजा	–	प्रजा	सिद्धिः	–	असिद्धिः
रौद्रः	–	कोमलः	क्रूरः	–	अक्रूरः	भविष्यति	–	आसीत्/अभवत्
उग्रः	–	शान्तः	प्रियवादिनम्	–	अप्रियवादिनम्	अति	–	न्यूनतम्
प्रविशति	–	निस्सरति	गुणस्य	–	दोषस्य	सस्नेहम्	–	घृणा सहितम्
विहाय	–	गृहीत्वा	सन्ततिः	–	असन्ततिः	यथासमयम्	–	अयथासमयम्
कलहम्	–	प्रेम	प्रियाः	–	अप्रियाः	आश्रिताः	–	अनाश्रिताः
स्मरत	–	विस्मरत	ददाति	–	गृह्णाति	गुह्यम्	–	प्रकटम्
भुङ्क्ते	–	पिबति	प्रीति	–	घृणा	सुखम्	–	दुःखम्
आत्मप्रियम्	–	परप्रियम्	हितम्	–	अहितम्	सुखे	–	दुःखे
हिते	–	अहिते	प्रियम्	–	अप्रियम्	अंगुष्ठः	–	हस्तः, पाणिः
हानिः	–	लाभः	सहयोगेन	–	असहयोगेन	जलम्	–	स्थलम्
गर्वम्	–	विनयम्	याति	–	आयाति	सञ्चारी	–	असञ्चारी

पर्यायपदानि (Synonyms)

पदानि	**–**	**पर्यायाः**	**पदानि**	**–**	**पर्यायाः**	**पदानि**	**–**	**पर्यायाः**
समीपे	–	पार्श्वे	समर्थः	–	शक्नोति	विविधाः	–	अनेकाः/अनेके
विश्राम्यते	–	विश्रामं करोति	अपरः	–	द्वितीयः	कलरवं कुर्वन्ति	–	कूजन्ति
धुनोति	–	गृहीत्वा आन्दोलयति	वारं वारं	–	भूयः भूयः	दशाम्	–	स्थितिम्
कर्णमाकृष्य	–	श्रोत्रं कर्षयित्वा	दृष्ट्वा	–	अवलोक्य, विलोक्य	हर्ष	–	प्रसन्नता

तुदतः	–	पीडतः/अवसादयतः	वृक्षात्	–	तरोः	सिंहः	–	वनराजः
कलरवम्	–	पक्षिणां कूजनम्	हर्तुम्	–	मारयितुम्	तुच्छः	–	हीनः
क्रुद्धः	–	कुपितः	इच्छति	–	वाञ्छति	जीवैः	–	प्राणिभिः
क्रोधेन	–	कोपेन	अयोग्यः	–	न योग्यः	भवितुम्	–	शक्नोतुम्
रक्षकः	–	यः रक्षा कर्तुम् शक्नोति सः रक्षकः	तुदन्ति	–	पीडयन्ति			
रक्षिष्यसि	–	रक्षणं करिष्यसि	वित्रस्तान्	–	विशेषेण भीतान्	पीड्यमानान	–	पीडितं कुर्वन्तम्
अपरैः	–	अन्यैः	सदा	–	सर्वदा, नित्यम्	जन्तून	–	प्राणिनः
कृतान्तः	–	यमराजः	संशयः	–	संदेहः	योग्यः	–	दक्षः, कुशलः
चेत्	–	यदि	अतिविकत्थनेन	–	आत्मप्रशंसया	कथितम्	–	उक्तम्, वदितम्
वनराजः	–	वनस्य राजा	विस्मर्यते	–	न स्मर्यते	भवितुम्	–	शक्नोति
भक्षकम्	–	भक्षणं करोति	जनानाम्	–	मनुष्याणाम्	मेध्यम्	–	शुद्धम्
परिश्रमः	–	उद्यमः	कर्कश	–	कटु	अमेध्यम्	–	अशुद्धम्
आदर्शः	–	उच्चः	का-का	–	काकस्य ध्वनिः	अस्ति	–	वर्तते
गौराङ्गः	–	श्वेत वर्णीयः	जल्पसि	–	व्यर्थम् वदसि	अनृतम्	–	न ऋतम्
विद्यार्थी	–	छात्रः	वसन्तसमये	–	वसन्त ऋतौ	भेदः	–	अन्तरम्
संततिं	–	आत्मजः	पोथयित्वा	–	पीडयित्वा	वन्यः	–	जंगल/कानन
पालयामि	–	पालनं करोमि	मारयिष्यामि	–	हनिष्यामि	तुदन्तम्	–	पीऽयमानम्
सम्राट्	–	राजा	विधूय	–	आकर्ष्य	योग्यः	–	दक्षः, कुशलः
कायः	–	शरीरः	उपरि	–	उच्चैः	वनराज	–	वनस्य स्वामी
सर्वाम्	–	सम्पूर्णाम्	स्युः	–	भवेत्	शीघ्रम्	–	आशु
शृण्वन्	–	आकर्णयन्	करुणापरः	–	दयालुः	गजः	–	हस्ती, करी
पराक्रमी	–	हिम्मती	पक्षी	–	खगः	वृक्षोपरि	–	वृक्षस्य उपरि
अस्ति	–	वर्तते, विद्यते	अन्यः	–	अपरः	गजः	–	हस्ती, करी
अतः	–	एतदर्थम्	दृष्ट्वा	–	अवलोक्य	शृत्वा	–	आकर्ण्य
तुदन्	–	पीड्यन्	विहाय	–	त्यक्त्वा	वदति	–	कथयति
राजा	–	नृपः, भूपतिः, नरपतिः	वानराः	–	कपयः, मर्कटाः	जलम्	–	वारि, नीर
विशालकायम्	–	विशालम् शरीरम्	कालम्	–	समयम्	भयंकरम्	–	भयं युक्तं
बहु	–	अत्यधिकम्	पराक्रमिणाम्	–	साहसिनाम	अविचलः	–	न विचलः
रक्षायै	–	रक्षार्थम्	रक्षोपायान्	–	रक्षायाः उपायान्	स्थितप्रज्ञ	–	यस्यः बुद्धि स्थिरः भवति
साट्टहास	–	अट्टहासेन पूर्वकम्	चिन्तयिष्यामि	–	विचारयिष्यामि	जन्तुभिः	–	प्राणैः
ध्यानावस्थाम्	–	ध्यानस्य स्थितिम्	पश्यतु	–	दर्शय	मीनान्	–	मत्स्यान्
शिरसि	–	मस्तके	अधिगृह्य	–	गृहीत्वा	विधातुः	–	परमात्मनः
भक्षयसि	–	खादयसि	अधुना	–	इदानीम्, सम्प्रति	धिक्	–	धिक्कार अस्ति
अहिभुक्	–	मयूरः	अवमानितम्	–	अपमानितम्	आराधना	–	प्रार्थना
जातम्	–	अभवत्	सौंदर्यम्	–	शोभनम्, सुंदरता	सगर्वम्	–	अहङ्कारेण सहितम्
सदृशः	–	इव, समान	योग्यः	–	दक्षः, कुशलः	अपूर्वम्	–	अद्भुतम्
शीघ्रम्	–	क्षिप्रम्	वनात्	–	काननात्	वानर	–	मर्कट
तत्पराः	–	उद्यताः	भव	–	असि	कृतः	–	रचितः
उद्घाटय	–	प्रसार्य	क्षमः	–	सक्षमः	काले	–	समये
पातुम्	–	पीत्यार्थम्	वनराजपदाय	–	वनराजस्य पदाय	एतदर्थम्	–	अतएव
संशीति	–	संशयः, संदेहः	सुपात्रम्	–	योग्य पात्रम्	नदीजलम्	–	नद्याः जलम्
विवादम्	–	कलहम्	अवकाशः	–	स्थानम्	भक्षकः	–	यः भक्षणं करोति

रक्षक:	–	य: रक्षां करोति	सम्यक्	–	उचित प्रकारेण	उच्चै:	–	उपरि
अनायास	–	सहसा	खग:	–	पक्षी	अयुक्तम्	–	अयोग्यम्
तर्हि	–	तदा	रक्षिष्यति	–	रक्षणं करिष्यति	वीक्ष्य	–	दृष्ट्वा
निर्णयम्	–	किं उचितं किं न उचितम्	अपूर्णम्	–	सम्पूर्णम्	राजा	–	नृप:
कराल	–	भयङ्कर	वक्त्रस्य	–	मुखस्य	स्वभाव:	–	प्रकृति:
अति उग्रम्	–	भयङ्कर: क्रोधी	कृत्वा	–	रचयित्वा	व:	–	अस्माकम्
अति	–	अत्यधिकम्	नृपतिम्	–	राजानम्, भूपतिम्	क्रूरम्	–	निर्दयम्
अप्रियवादिनम्	–	य: प्रियं न वदति	रौद्र:	–	भयङ्कर:	सिद्धि:	–	सफलता
सस्नेहम्	–	स्नेहेन सहितम्	जननी	–	माता	सन्तति:	–	आत्मज:
विद्यते	–	अस्ति	कलहम्	–	विवादम्	यथासमयम्	–	उचित समयम्
स्मरत	–	विस्मरत	कलहेन	–	विवादेन	परं	–	परन्तु
अपितु	–	बल्कि	रसमयम्	–	प्रेममयम्	विहाय	–	त्यक्त्वा
मोदध्वम्	–	आनन्दमयम्	प्रकृतिमातरम्	–	प्रकृते: मातरम्	कथितम्	–	वदितम्
मिथ:	–	परस्परम्	प्रविशति	–	प्रवेशम् करोति	ददाति	–	यच्छति
आख्याति	–	कथयति	भुङ्क्ते	–	खादति	प्रीति	–	प्रेम
गुह्यम्	–	गुप्तम्	हितम्	–	हितकारी	आत्मप्रिय	–	स्वप्रिय
राज्ञ:	–	नृपस्य	प्रजासुखे	–	प्रजाया: सुखे	जायते	–	भवति
विवादत:	–	कलहं कुर्वन्त:	परस्परम्	–	मिथ:	सहयोगेन	–	मिलित्वा

अगाधजलसञ्चारी	–	असीमितजलधारायां भ्रमन्	अगुष्ठोदकमात्रेण	–	अंगुष्ठमात्रजले
शफरी	–	लघुमत्स्य:	गर्वम्	–	घमण्डम्, अभिमानम्
याति	–	गच्छति	रोहित:	–	रोहित नाम मत्स्य:
उदकम्	–	जलम्			

अभ्यास-प्रश्ना:

1. (I) एकपदेन उत्तरत– (अधोलिखितप्रश्नानां कृते क्रमश: पूर्वमेव दत्तं पाठम् पश्यत)

(क) (*i*) कस्य समीपे एका नदी वहति? (*ii*) एक: सिंह: कथम् विश्राम्यते? (*iii*) वानरा: वारं वारं कम् तुदन्ति?

(ख) (*i*) क: कथयति अहं वनराज: अस्मि? (*ii*) सिंह: कथम् अवदत्? (*iii*) राजा तु कीदृश: भवति?

(ग) (*i*) अनृतं वदसि चेत् क: दशेत्? (*ii*) क: वातावरणम् आकुली करोति? (*iii*) कस्य सत्यप्रियता तु जनानां कृते उदाहरणस्वरूपा?

(घ) (*i*) काक: कस्य सन्ततिं पालयति? (*ii*) करुणापर: पक्षिसम्राट् क:? (*iii*) क: वनराजपदाय योग्य:?

(ङ) (*i*) गज: वृक्षम् केन आलोडयितुमिच्छति? (*ii*) वानर: किम् कृत्वा वृक्षामारोहति? (*iii*) क: शीतले जले तिष्ठति?

(च) (*i*) 'को न जानाति तव ध्यानावस्थाम्।' इति क: कथयति? (*ii*) केषाम् सौन्दर्यम् अपूर्वम् अस्ति? (*iii*) वानर: कस्मै आत्मानं योग्य: वदति?

(छ) (*i*) नदीजलं पातुम् कौ आगतौ? (*ii*) 'आवामेव योग्यौ' इति कौ वदत:? (*iii*) केन बहुकालपर्यन्तं शासनं कृतम्?

(ज) (*i*) सर्वे पक्षिण: कस्य सज्जायै गन्तुमिच्छन्ति? (*ii*) गहननिद्रायां क: स्वपिति? (*iii*) आत्मश्लाघाहीन: को वर्तते?

(झ) (*i*) सर्वेषाम् प्राणिनाम् माता का? (*ii*) सर्वे प्राणिन: परस्परम् किं कुर्वन्ति? (*iii*) प्रीतिलक्षणम् कतिविधम् अस्ति?

(II) पूर्णवाक्येन उत्तरत– (अधोलिखितप्रश्नानां कृते क्रमश: पूर्वमेव दत्तं पाठम् पश्यत)

(क) (*i*) क्रुद्ध: सिंह: किम् करोति? (*ii*) पक्षिण: अपि सिंहस्य दशां दृष्ट्वा किं कुर्वन्ति?

(ख) (*i*) वानर: सिंहम् किं कथयति? (*ii*) सिंह: क्रोधेन गर्जन् किं वदति?

(ग) (*i*) काक: स्वविषये किं कथयति? (*ii*) केषाम् किं विश्वप्रथितम्?

(घ) (*i*) गज: आत्मन: विषये किं कथयति? (*ii*) काक: स्वविषये पिकं किं वदति?

(ङ) (*i*) बकः कुत्र स्थित्वा सर्वेषां रक्षायाः उपायान् चिन्तयिष्यति? (*ii*) सिंहः कथं हसति वदति च?

(च) (*i*) विधात्रा मयूरः पक्षिराजः किमर्थम् कृतः? (*ii*) काकः मयूरं सव्यङ्ग्यं किं वदति?

(छ) (*i*) सिंहः किम् कथयति? (*ii*) बकानुसारेण किं निश्चेतव्यम्?

(ज) (*i*) सर्वे पक्षिणः उच्चैः किं कथयन्ति? (*ii*) काकः अट्टहासपूर्णेन स्वरेण किं वदति?

(झ) (*i*) प्रकृतिमाता किं कथयति? (*ii*) सर्वे जीवाः किं कुर्वन्तु?

2. अधोलिखिते श्लोकस्यान्वये मञ्जूषायाः सहायतया रिक्तस्थानानि पूरयत–

(क) **यो न रक्षति वित्रस्तान् पीड्यमानान्परैः सदा।**
जन्तून् पार्थिवरूपेण स कृतान्तो न संशयः।।

अन्वयः– यः (*i*) .... वित्रस्तान् परैः (*ii*) .... पीड्यमानान् (*iii*) .... न रक्षति स (*iv*) .... न संशयः।

मञ्जूषा– कृतान्तो, पार्थिवरूपेण, सदा, जन्तून्

(ख) **काकः कृष्णः पिकः कृष्णः को भेदः पिककाकयोः।**
वसन्तसमये प्राप्ते काकः काकः पिकः पिकः।।

अन्वयः– काकः कृष्ण (*i*) .... कृष्णः को (*ii*) .... पिककाकयोः (*iii*) .... प्राप्ते काकः (*iv*) .... पिकः पिकः।

मञ्जूषा– वसन्तसमये, काकः, पिकः, भेदः

(ग) **यदि न स्यान्नरपतिः सम्यङ्नेता ततः प्रजा।**
अकर्णधारा जलधौ विप्लवेतेह नौरिव।।

अन्वयः–यदि सम्यङ्नेता (*i*) .... न स्यात् ततः (*ii*) .... अकर्णधारा (*iii*) .... नौरिव इव (*iv*) ....।

मञ्जूषा– विप्लवेत्, नरपतिः, जलधौ, प्रजा

(घ) **स्वभावरौद्रमत्युग्रं क्रूरमप्रियवादिनम्।**
उलूकं नृपतिं कृत्वा का नु सिद्धिर्भविष्यति।।

अन्वयः–स्वभाव रौद्रम् (*i*) .... क्रूरम् (*ii*) .... उलूकं (*iii*) .... कृत्वा का नु (*iv*) .... भविष्यति।।

मञ्जूषा– प्रियवादिनम्, भविष्यति, अतिउग्रं, नृपतिं

(ङ) **ददाति प्रतिगृह्णाति, गुह्यमाख्याति पृच्छति।**
भुङ्क्ते योजयते चैव षड्-विधं प्रीतिलक्षणम्।।

अन्वयः–ददाति (*i*) .... गुह्यम् आख्याति (*ii*) .... भुङ्क्ते (*iii*) .... च एव (*iv*) .... प्रीतिलक्षणम्।।

मञ्जूषा– योजयते, पृच्छति, षड्विधं, प्रतिगृह्णाति

(च) **प्रजासुखे सुखं राज्ञः, प्रजानां च हिते हितम्।**
नात्मप्रियं हितं राज्ञः, प्रजानां तु प्रियं हितम्।।

अन्वयः–राज्ञः (*i*) .... सुखं च (*ii*) .... हिते हितम् न आत्मप्रियं (*iii*) .... हितं प्रजानां तु (*iv*) .... प्रियम्।।

मञ्जूषा– प्रजानां, प्रजासुखे, राज्ञः, हितम्

(छ) **अगाधजलसञ्चारी न गर्वं याति रोहितः।**
अङ्गुष्ठोदकमात्रेण शफरी फुर्फुरायते।।

अन्वयः–अगाध जलसञ्चारी (*i*) .... न गर्वं (*ii*) .... (*iii*) .... अङ्गुष्ठ (*iv*) .... फुर्फुरायते।।

मञ्जूषा– उदकमात्रेण, याति, रोहितः, शफरी

(ज) **प्राणिनां जायते हानिः परस्परविवादतः।**
अन्योन्यसहयोगेन लाभस्तेषां प्रजायते॥

अन्वयः–परस्पर विवादतः (*i*) .... हानिः (*ii*) .... अन्योन्य (*iii*) .... तेषां (*iv*) .... प्रजायते॥

मञ्जूषा– लाभः, प्राणिनां, सहयोगेन, जायते

3. **भावार्थलेखनम्–**

समुचितपदेन रिक्तस्थानानि पूरयत, येन कथनानां भावार्थः स्पष्टं भवेत्–

(क) **यो न रक्षति वित्रस्तान् पीड्यमानान्परैः सदा।**
जन्तून् पार्थिवरूपेण स कृतान्तो न संशयः॥

भावार्थः–अस्य भावोऽस्ति यत् यः राजा (*i*).................... दुःखीः त्रस्तान् (*ii*).................... च पीड्यमानान् जीवान् स्व (*iii*) .... न रक्षति सः तु निस्संदेहं साक्षात् (*iv*).................... एव भवति।

मञ्जूषा– यमराजः, नृपरूपेण, जीवान्, पराक्रमात्

(ख) **काकः कृष्णः पिकः कृष्णः कोः भेदः पिककाकयोः।**
वसन्तसमये प्राप्ते काकः काकः पिकः पिकः॥

भावार्थः–अस्य भावोऽस्ति यत् (*i*) .... वर्णः कृष्णः वर्तते पिकस्य अपि वर्णः (*ii*).................... एव अस्ति। अतः तयोः पिके काके च कः भेदः अस्ति। अर्थात् वर्ण दृष्ट्या तयोः कश्चिद् भेदा न दृश्यते। परन्तु यदा (*iii*) .... समयः आगच्छति तदा तयोः स्वरै ज्ञायते यत् कः (*iv*) .... अस्ति कश्च पिकोवर्तते।

मञ्जूषा– वसन्तस्य, काकस्य, काकः, कृष्णः

(ग) **यदि न स्यान्नरपतिः सम्यङ्नेता ततः प्रजा।**
अकर्णधारा जलधौ विप्लवेतेह नौरिव॥

भावार्थः–अस्य भावोऽस्ति यत् यदि प्रजायाः उत्तमः (*i*) .... नृपः न भवेत् तदा तस्य प्रजा कर्णौ (*ii*).................... जलयुक्ते (*iii*).................... विप्लवन्ती नौका इव (*iv*).................... निमज्जति।

मञ्जूषा– संसारसागरे, नेता, यावत्, सागरे

(घ) **स्वभावरौद्रमत्युग्रं क्रूरमप्रियवादिनम्।**
उलूकं नृपतिं कृत्वा का नु सिद्धिर्भविष्यति॥

भावार्थः–अस्य भावोऽस्ति यत् काकः उलूकविषये सर्वान् (*i*) .... वदति यत् इमम् भयङ्कर, स्वभावम्, अतीव (*ii*) .... निर्दयम् अप्रियवादिनम् च (*iii*) .... नृपं कृत्वा भवतां सर्वेषाम् कः (*iv*) .... भविष्यति? अर्थात् कश्चिदपि न।

मञ्जूषा– खगान्, लाभः, क्रोधिनम्, उलूकं

(ङ) **ददाति प्रतिगृह्णाति, गुह्यमाख्याति पृच्छति।**
भुङ्क्ते योजयते चैव षड्विधं प्रीतिलक्षणम्॥

भावार्थः–अर्थात् मित्रं सदैव स्वमित्रं सुखं (*i*) .... तस्माच्च (*ii*) .... गृह्णाति, गुप्तवार्ताः उक्त्वा (*iii*) .... प्रश्नान् पृच्छति, खादति तेन सह आत्मानं योजयति इति षट्विधं (*iv*) .... लक्षणं भवति।

मञ्जूषा– प्रीतेः, सुखम्, यच्छति, ज्ञानार्थम्

(च) **प्रजासुखे सुखं राज्ञः, प्रजानां च हिते हितम्।**
नात्मप्रियं हितं राज्ञः, प्रजानां तु प्रियं हितम्॥

भावार्थः–अर्थात् श्रेष्ठः राजा (*i*) .... सुखे एव स्व सुखं प्रजानाञ्च (*ii*) .... एव स्वहितं मन्यते। तस्य हितन्तु कदापि (*iii*) .... प्रियं न भवति (*iv*) .... तु हितमेव तस्मै प्रियं भवति।

मञ्जूषा– प्रजानाम्, आत्मनः, प्रजानाम, हिते

(छ) **अगाधजलसञ्चारी न गर्वं याति रोहितः।**
अङ्गुष्ठोदकमात्रेण शफरी फुर्फुरायते॥

भावार्थः–अस्य भावोऽस्ति यत् ये जनाः धैर्यशालिनः (*i*) .... भवन्ति ते अगाधजले सञ्चरन्तं (*ii*) .... मत्स्यम् इव शान्ताः भवन्ति। परं अशान्ताः जनाः (*iii*) .... प्रकृतेः भवन्ति ते सदैव अल्पामपि सफलतां प्राप्य शफरी मत्स्यमिव अल्पमात्रैव (*iv*) .... भवन्ति।

मञ्जूषा– चञ्चल, शान्तिप्रियाः, अहंकारिणः, रोहितं

(ज) प्राणिनां जायते हानिः परस्परविवादतः।
अन्योन्यसहयोगेन लाभस्तेषां प्रजायते।।

भावार्थः–यदा जीवाः प्राणिनोवा परस्परं (*i*) .... कुर्वन्ति तदा तेषां (*ii*) .... एवं भवति परं यदा तेषां (*iii*) .... सहयोगो भवति तदैव तेषां (*iv*) .... भवति।

मञ्जूषा– लाभः, विवादं, हानिः, परस्परं

4. अधोलिखितवाक्यानि घटनाक्रमानुसारं पुनर्लिखत–

I. (क) वनस्य समीपे एका नदी वहति।
(ख) अपरः वानरः सिंहस्य कर्णमाकृष्यति।
(ग) सिंहः क्रुद्धः भवति।
(घ) एवमेव वानराः वारं वारं सिंहम् तुदन्ति।
(ङ) एक सिंह सुखेन विश्रामं करोति।
(च) सः तम् प्रहर्तुमिच्छति।
(छ) एकः वानरः तस्य पुच्छं धुनोति।
(ज) वानरः कूर्दित्वा वृक्षमारोहति।

II. (क) सिंहः क्रोधेन गर्जति अहम् वनराजः अस्मि।
(ख) बकः कथयति अहम् अविचलः ध्यानमग्नः अतः अहम् योग्यः।
(ग) वानरः कथयति राजा तु रक्षकः भवति परं भवान् तु भक्षकः।
(घ) सिंहस्य दुर्वस्थाम् दृष्ट्वा सर्वे जीवाः हसन्ति।
(ङ) मयूरः कथयति मम पिच्छानामपूर्वं सौन्दर्यम् अतः अहमेव योग्यः।
(च) पिकः कथयति अहम् मधुभाषिणी अतः अहमेव योग्यः।
(छ) ततः काकं प्रवेशं कृत्वा कथयति अहमेव योग्यः।
(ज) गजः कथयति अहं विशालकायः बलशाली पराक्रमी अतः अहम् योग्यः अस्मि।

III. (क) एकः सिंहः सुप्यति स्म।
(ख) ततः प्रकृति माता प्रविशति।
(ग) वानराः तम् तुदन्ति स्म।
(घ) पशुराजा न भवितव्यम् अपितु कोऽपि पक्षी एव राजेति निश्चेतव्यम्।
(ङ) सर्वे प्राणिनः स्व-स्वगुणस्य चर्चां कुर्वन्ति।
(च) सर्वेषाम् प्राणिनामेव यथासमयम् महत्त्वं विद्यते।
(छ) सर्वे प्राणिनः परस्परं विवादं कुर्वन्ति योग्यं च कथयन्ति।
(ज) मिलित्वा एव मोदध्वं जीवनं रसमयं कुरुध्वम्।

5. पाठांशाधारितं बहुविकल्पीयप्रश्नाः–

(क) वनस्य दृश्यं समीपे एवैका नदी वहति। एकः सिंहः सुखेन विश्राम्यते तदैव एकः वानरः आगत्य तस्य पुच्छं धुनोति। क्रुद्धः सिंहः तं प्रहर्तुमिच्छति परं वानरस्तु कूर्दित्वा वृक्षमारूढः। तदैव अन्यस्मात् वृक्षात् अपरः वानरः सिंहस्य कर्णमाकृष्य पुनः वृक्षोपरि आरोहति। एवमेव वानराः वारं वारं सिंहं तुदन्ति। क्रुद्धः सिंहः इतस्ततः धावति, गर्जति परं किमपि कर्तुमसमर्थः एव तिष्ठति। वानराः हसन्ति वृक्षोपरि च विविधाः पक्षिणः अपि सिंहस्य एतादृशीं दशां दृष्ट्वा हर्षमिश्रितं कलरवं कुर्वन्ति।

(*i*) वानराः वारं-वारं कं तुदन्ति?
(क) गजं (ख) सिंहं (ग) अश्वं (घ) गर्दभं

(*ii*) गर्जन् अपि किमपि कर्तुम् असमर्थः कः?
(क) वनराजः (ख) वानरः (ग) व्याघ्रः (घ) गजः

(*iii*) वृक्षस्य उपरि स्थित्वा के कलरवं कुर्वन्ति?
(क) वानराः (ख) खगाः (ग) खराः (घ) सिंहाः

(ख) अरे! अरे! मां विहाय कथमन्यः कोऽपि राजा भवितुमर्हति। अहं तु शीतले जले बहकालपर्यन्तम् अविचलः ध्यानमग्नः स्थितप्रज्ञ इव स्थित्वा सर्वेषां रक्षायाः बहुकालपर्यन्तम् अविचलः ध्यानमग्नः स्थितप्रज्ञ इव स्थित्वा सर्वेषां रक्षायाः उपायान् चिन्तयिष्यामि, योजनां निर्मीय च स्वसभायां विविधपदमलंकुर्वाणैः जन्तुभिश्च मिलित्वा रक्षोपायान् क्रियान्वितान् कारयिष्यामि, अतः अहमेव वनराजपदप्राप्तये योग्यः।

(*i*) शीतले जले बहुकालपर्यन्तम् अविचलः एव स्थातुं कः समर्थः?
(क) वानरः (ख) सिंह (ग) गजः (घ) बकः

(*ii*) जले स्थिते अपि सर्वेषां रक्षायाः उपायान् कः चिन्तयिष्यति?
(क) गजः (ख) बकः (ग) काकः (घ) पिकः

(*iii*) अस्मिन् गद्यांशे कः स्वस्य वर्णनं करोति?
(क) बकः (ख) पिकः (ग) मयूरः (घ) गजः

(ग) यतः मम नृत्यं तु प्रकृतेः आराधना। पश्य! पश्य! मम पिच्छानामपूर्वं सौंदर्यम् (पिच्छानुद्घाट्य नृत्यमुद्रायां स्थितः सन्) न कोऽपि त्रैलोक्ये मत्सदृशः सुन्दरः। वन्यजन्तूनामुपरि आक्रमणं कर्तारं तु अहं स्वसौन्दर्येण नृत्येन च आकर्षितं कृत्वा वनात् बहिष्करिष्यामि। अतः अहमेव योग्यः वनराजपदाय।

(*i*) कस्य नृत्यं प्रकृतेः आराधना?

(क) काकस्य (ख) वानरस्य (ग) बकस्य (घ) मयूरस्य

(*ii*) वन्यजन्तूनामुपरि आक्रमणं कर्तारं कः वनात् बहिष्करिष्यति?

(क) बकः (ख) वानरः (ग) मयूरः (घ) गजः

(*iii*) 'न कोऽपि त्रैलोक्ये मत्सदृशः सुन्दरः।' अत्र 'मत्सदृशः' कस्य कृते आगतः?

(क) मयूरस्य (ख) गजस्य (ग) काकस्य (घ) बकस्य

6. पाठाधारितं बहुविकल्पीयप्रश्नाः–

(क) परस्परविवादतः केषाम् हानिः जायते?

(*i*) वृक्षाणां (*ii*) पादपानाम् (*iii*) प्राणिनां (*iv*) सर्वेषां

(ख) कस्य परिश्रमः ऐक्यं च विश्वप्रथितम्?

(*i*) काकस्य (*ii*) बकस्य (*iii*) पिकस्य (*iv*) वानरस्य

(ग) अहिभुक् इति कस्य उपाधिः?

(*i*) पिकस्य (*ii*) काकस्य (*iii*) मयूरस्य (*iv*) बकस्य

(घ) परभृत् इति उपाधिना कः प्रसिद्धः?

(*i*) पिकः (*ii*) काकः (*iii*) मयूरः (*iv*) बकः

(ङ) अनृतं वदसि चेत् कः दशेत्?

(*i*) मयूरः (*ii*) सर्पः (*iii*) पिकः (*iv*) काकः

(च) अस्मिन् पाठे कस्य वर्णनम् न प्राप्यते?

(*i*) सिंहस्य (*ii*) खरस्य (*iii*) वानरस्य (*iv*) गजस्य

(छ) 'यदि अहं कृष्णवर्णः तर्हि त्वं किं गौराङ्गः?' अत्र कः कम् प्रति उद्बोधनं करोति?

(*i*) काकः बकं प्रति (*ii*) पिकः काकं प्रति (*iii*) काकः पिकं प्रति (*iv*) बकः गजं प्रति

(ज) अन्योन्यसहयोगेन केषां लाभः प्रजायते?

(*i*) वृक्षाणाम् (*ii*) पर्वतानाम् (*iii*) पादपानां (*iv*) प्राणिनां

(झ) कस्याः/कस्य माध्यमेन अन्ते निष्कर्षः स्थापितः?

(*i*) प्रकृतिपितुः (*ii*) प्रकृतिमातुः (*iii*) प्रकृतिजन्तुः (*iv*) गजस्य

(ञ) अत्र प्रीतिलक्षणम् कति विधं प्रदत्तम्?

(*i*) पञ्च (*ii*) त्रि (*iii*) द्वि (*iv*) षड्

उत्तराणि

1. (I) (क) (*i*) वनस्य (*ii*) सुखेन (*iii*) सिंहम्
(ख) (*i*) सिंहः (*ii*) क्रोधेन (*iii*) रक्षकः
(ग) (*i*) काकः (*ii*) काकः (*iii*) काकस्य
(घ) (*i*) पिकस्य (*ii*) काकः (*iii*) गजः
(ङ) (*i*) स्वशुण्डेन (*ii*) कूर्दित्वा (*iii*) बकः
(च) (*i*) मयूरः (*ii*) पिच्छानाम् (*iii*) वनराजपदाय
(छ) (*i*) व्याघ्रचित्रकौ (*ii*) व्याघ्रचित्रकौ (*iii*) सिंहेन
(ज) (*i*) उलूकम् (*ii*) उलूकः (*iii*) उलूकः
(झ) (*i*) प्रकृतिमाता (*ii*) कलहम् (*iii*) षड्विधम्

(II) (क) (*i*) क्रुद्धः सिंहः इतस्ततः धावति, गर्जति परं किमपि कर्तुम् समर्थः एव न तिष्ठति।
(*ii*) पक्षिणः अपि सिंहस्य एतादृशीं दशां दृष्ट्वा हर्षमिश्रितं कलरवं कुर्वन्ति।

(ख) (*i*) वानर: सिंहम् कथयति त्वं तु वनराज: भवितुम् तु सर्वथाऽयोग्य:। राजा तु रक्षक: भवति परं भवान् भक्षक:।

(*ii*) सिंह: क्रोधेन गर्जन् वदति यत्–भो:! अहं वनराज: किं भयं न जायते? किमर्थं मामेवं तुदन्ति सर्वे मिलित्वा?

(ग) (*i*) काक: स्वविषये कथयति यत् अस्माकम् परिश्रमं ऐक्यं च विश्वप्रथितम् अपि च काकचेष्ट: विद्यार्थी एव आदर्शच्छात्र: मन्यते।

(*ii*) काकानाम् परिश्रम: ऐक्यं च विश्वप्रथितम्।

(घ) (*i*) गज: आत्मन: विषये कथयति यत् अहम् विशालकाय:, बलशाली, पराक्रमी च। मया सदृश: कोऽपि पराक्रमी नास्ति।

(*ii*) काक: स्वविषये पिकं वदति–रे परभृत्! अहं यदि तव संततिं न पालयामि तर्हि कुत्र स्यु: पिका:? अत: अहम् एव करुणापर: पक्षिसम्राट् काक:।

(ङ) (*i*) बक: शीतले जले बहुकालपर्यन्तम् अविचल: ध्यानमग्न: स्थितप्रज्ञ: इव स्थित्वा सर्वेषां रक्षाया: उपायान् चिन्तयिष्यति।

(*ii*) गजं वृक्षात् वृक्षं प्रति धावन्तं दृष्ट्वा सिंह: अपि हसति वदति च।

(च) (*i*) मयूरस्य शिरसि राजमुकुटमिव शिखां स्थापयता विधात्रा एव मयूरम् पक्षिराज: कृत:।

(*ii*) काक: मयूरं सव्यङ्ग्यं वदति–अरे अहिभुक्। नृत्यातिरिक्तं का तव विशेषता यत् त्वां वनराजपदाय योग्यं मन्यामहे वयम्।

(छ) (*i*) सिंह: व्याघ्रचित्रकौ कथयति यत् युवामापि मत्सदृशौ भक्षकौ न तु रक्षकौ। एते वन्यजीवा: भक्षकं रक्षकपदयोग्यं न मन्यन्ते अतएव विचारविमर्श: प्रचलति।

(*ii*) सर्वथा सम्यगुक्तम् सिंहमहोदयेन। वस्तुत: एव सिंहेन बहुकालपर्यन्तं शासनं कृतम् परमधुना तु कोऽपि पक्षी एव राजेति बकानुसारेण निश्चेतव्यम् अत्र।

(ज) (*i*) काक: अट्टहासपूर्णेन स्वेरण वदति–सर्वे पक्षिण: उच्चै: कथयन्ति यत् आम् आम् कश्चित् खग: एव वनराज: भविष्यति इति।

(*ii*) काक: अट्टहासपूर्णेन स्वेरण वदति–सर्वथा अयुक्तमेतत् यन्मयूर-हंस-कोकिल-चक्रवाक-शुक-सारसादिषु पक्षिप्रधानेषु विद्यमानेषु दिवान्धस्यास्य करालवक्त्रस्याभिषेकार्थं सर्वे सज्जा:। पूर्णं दिनं यावत् निद्रायमाण: एष: कथमस्मान् रक्षिष्यति।

(झ) (*i*) प्रकृतिमाता कथयति सर्वेषामेव महत्त्वं विद्यते यथासमयम् न तावत् कलहेन समयं वृथा यापयन्तु अपितु मिलित्वा एव मोदध्वं जीवनं च रसमयं कुरुध्वम्।

(*ii*) सर्वे जीवा: यथासमयम् न तावत् कलहेन समयं वृथा यापयन्तु अपितु मिलित्वा एव मोदध्वं जीवनं च रसमयं कुरुध्वम्।

2.

	(*i*)	(*ii*)	(*iii*)	(*iv*)
(क)	पार्थिवरूपेण	सदा	जन्तून्	कृतान्तो
(ख)	पिक:	भेद:	वसन्तसमये	काक:
(ग)	नरपति:	प्रजा	जलधौ	विप्लवेत्
(घ)	अति उग्रं	प्रियवादिनम्	नृपतिं	भविष्यति
(ङ)	प्रतिगृह्णाति	पृच्छति	योजयते	षड्विधं
(च)	प्रजासुखे	प्रजानां	राज्ञ:	हितम्
(छ)	रोहित:	याति	शफरी	उदकमात्रेण
(ज)	प्राणिनां	जायते	सहयोगेन	लाभ:

3.

	(*i*)	(*ii*)	(*iii*)	(*iv*)
(क)	नृपरूपेण	जीवान्	पराक्रमात्	यमराज:
(ख)	काकस्य	कृष्ण:	वसन्तस्य	काक:
(ग)	नेता	यावत्	सागरे	संसारसागरे
(घ)	खगान्	क्रोधिनम्	उलूकं	लाभ:
(ङ)	यच्छति	सुखम्	ज्ञानार्थम्	प्रीते
(च)	प्रजानाम्	हिते	आत्मन:	प्रजानाम्
(छ)	शान्तिप्रिया:	रोहितं	चञ्चल	अहंकारिण:
(ज)	विवादं	हानि:	परस्परं	लाभ:

4. I. (क) वनस्य समीपे एका नदी वहति। (ख) एक सिंह सुखेन विश्रामं करोति।

(ग) एक: वानर: तस्य तुच्छं धुनोति। (घ) सिंह: कुद्ध: भवति।

(ङ) स: तम् प्रहर्तुमिच्छति। (च) वानर: कूर्दित्वा वृक्षमारोहति।

(छ) अपर: वानर: सिंहस्य कर्णमाकृष्यति। (ज) एवमेव वानरा: वारं वारं सिंहम् तुदन्ति।

II. (क) सिंहस्य दुर्वस्थाम् दृष्ट्वा सर्वे जीवा: हसन्ति। (ख) सिंह: क्रोधेन गर्जति अहम् वनराज: अस्मि।

(ग) वानर: कथयति राजा तु रक्षक: भवति परं भवान् तु भक्षक:।

(घ) तत: काक: प्रवेशं कृत्वा कथयति अहमेव योग्य:। (ङ) पिक: कथयति अहम् मधुभाषिणी अत: अहमेव योग्य:।

(च) गज: कथयति अहं विशालकाय: बलशाली पराक्रमी अत: अहम् योग्य: अस्मि।

(छ) बकः कथयति अहम् अविचलः ध्यानमग्नः अतः अहम् योग्यः।

(ज) मयूरः कथयति मम पिच्छानामपूर्वं सौन्दर्यम् अतः अहमेव योग्यः।

III. (क) एकः सिंहः स्वपिति स्म। (ख) वानराः तम् तुदन्ति स्म।

(ग) सर्वे प्राणिनः स्व-स्वगुणस्य चर्चां कुर्वन्ति। (घ) सर्वे प्राणिनः परस्परं विवादं कुर्वन्ति योग्यं च कथयन्ति।

(ङ) पशुराजा न भवितव्यम् अपितु कोऽपि पक्षी एव राजेति निश्चेतव्यम्।

(च) ततः प्रकृतिमाता प्रविशति। (छ) सर्वेषाम् प्राणिनामेव यथासमयम् महत्त्वं विद्यते।

(ज) मिलित्वा एव मोदध्वं जीवनं रसमयं कुरुध्वम्।

5. (क) (*i*) (ख) सिंहं (*ii*)(क) वनराजः (*iii*)(ख) खगाः

(ख) (*i*) (घ) बकः (*ii*)(ख) बकः (*iii*)(क) बकः

(ग) (*i*) (घ) मयूरस्य (*ii*)(ग) मयूरः (*iii*)(क) मयूरस्य

6. (क)(*iii*) प्राणिनां (ख) (*i*) काकस्यः (ग)(*iii*) मयूरस्य (घ) (*i*) पिकः (ङ)(*iv*) काकः

(च)(*ii*) खरस्य (छ)(*iii*) काकः पिकं प्रति (ज)(*iv*) प्राणिनां (झ)(*ii*) प्रकृतिमातुः (ञ)(*iv*) षड्

मूल्याङ्कनम्

कक्षा-परीक्षा **समयः 30 मिनट**

1. अधोलिखितस्य नाट्यांशं पठित्वा एतदाधारित प्रश्नानाम् उत्तराणि निर्देशानुसारं लिखत–

(वनस्य दृश्यम् समीपे एवैका नदी अपि वहति।)

एकः सिंहः सुखेन विश्राम्यते तदैव एकः वानरः आगत्य तस्य पुच्छं धुनोति। क्रुद्धः सिंहः तं प्रहर्तुमिच्छति परं वानरस्तु कूर्दित्वा वृक्षमारूढः। तदैव अन्यस्मात् वृक्षात् अपरः वानरः सिंहस्य कर्णमाकृष्य पुनः वृक्षोपरि आरोहति। एवमेव वानराः वारं वारं सिंहं तुदन्ति। क्रुद्धः सिंहः इतस्ततः धावति, गर्जति परं किमपि कर्तुमसमर्थः एव तिष्ठति। वानराः हसन्ति वृक्षोपरि च विविधाः पक्षिणः अपि सिंहस्य एतादृशीं दशां दृष्ट्वा हर्षमिश्रितं कलरवं कुर्वन्ति।

निद्राभङ्गदुःखेन वनराजः सन्नपि तुच्छजीवैः आत्मनः एतादृश्या दुरवस्थया श्रान्तः सर्वजन्तून् दृष्ट्वा पृच्छति-

(I) एकपदेन उत्तरत (केवलं प्रश्नद्वयमेव)– **(1 × 2 = 1)**

(*i*) कस्य समीपे एका नदी वहति? (*ii*) एकः सिंहः कथम् विश्राम्यते?

(*iii*) वानराः वारं वारं कम् तुदन्ति?

(II) पूर्णवाक्येन उत्तरत (केवलं प्रश्नद्वयमेव)– **(1 × 2 = 2)**

(*i*) क्रुद्धः सिंहः किम् करोति? (*ii*) पक्षिणः अपि सिंहस्य दशां दृष्ट्वा किं कुर्वन्ति?

(*iii*) वानरः आगत्य किं करोति?

2. श्लोकस्य अन्वयं मञ्जूषायाः सहायतया पूरयन्तु– **(½ × 4 = 2)**

काकः कृष्णः पिकः कृष्णः को भेदः पिककाकयोः।
वसन्तसमये प्राप्ते काकः काकः पिकः पिकः॥

अन्वयः– काकः कृष्ण (*i*) .... कृष्णः को (*ii*) .... पिककाकयोः (*iii*) .... प्राप्ते काकः (*iv*) .... पिकः पिकः।

मञ्जूषा– | वसन्तसमये, काकः, पिकः, भेदः |

3. श्लोकानाम् भावम् उचितैः शब्दैः सम्पूरयत– **(½ × 4 = 2)**

यो न रक्षति वित्रस्तान् पीड्यमानान्परैः सदा।
जन्तून् पार्थिवरूपेण स कृतान्तो न संशयः॥

भावार्थः–अस्य भावोऽस्ति यत् यः राजा (*i*).................. दुःखीः त्रस्तान् (*ii*).................. च पीड्यमानान् जीवान् स्व (*iii*) .... न रक्षति सः तु निस्संदेहं साक्षात् (*iv*).................. एव भवति।

मञ्जूषा– | यमराजः, नृपरूपेण, जीवान्, पराक्रमात् |

❑❑❑